UFO
CINE MEDIA NETWORK

Publication: Navbharat Times
Date: 25/05/2020

NBT
नवभारत टाइम्स

निर्माताओं ने की बड़ी फिल्मों की सभी भाषाओं में रिलीज की मांग

कोरोना के बाद झगड़ना छोड़ देगी फिल्म इंडस्ट्री!

लॉकडाउन के बाद फिल्मों की शूटिंग मुश्किल होगी और नई फिल्में जल्दी नहीं आएंगी। निर्माताओं ने अपील की है कि बड़ी फिल्में सभी भाषाओं में रिलीज की जाएं, जिससे किसी को भी नुकसान ना हो। पेश है एक रिपोर्ट :

Prashant.Jain@timesgroup.com

मुश्किल वक्त में प्रतिद्वन्दी भी एक हो जाते हैं। बेशक अब इसका असर भारतीय सिनेमा जगत में भी नजर आ हा रहा है। कोरोना महामारी की रोकथाम के लिए हुए लॉकडाउन ने भारतीय फिल्म जगत से जुड़े लोगों को एक मंच पर लाकर एक करने की पहल कर दी है। जी हां, कोरोना से पहले अभी तक तक भले ही हिंदी और दूसरी भारतीय भाषाओं की फिल्में एक-दूसरे का मुकाबला करने को तैयार नजर आ रही हैं। लेकिन अगर आने वाले दिनों में सब कुछ सही रहा, तो पूरे भारत में एक रिलीज डेट पर किसी भी भाषा की सिर्फ एक बड़ी फिल्म ही रिलीज होगी। साथ ही हिंदी फिल्मों के स्टार्स की फिल्में दूसरी भारतीय भाषाओं में भी रिलीज होंगी और दूसरी भारतीय भाषाओं की फिल्में हिंदी में भी रिलीज होंगी।

इंडस्ट्रीवालों ने की मांग

हाल ही में हुई सिनेमाघरवालों, इंडस्ट्रीवालों और डिस्ट्रीब्यूटर्स ने एक ऑनलाइन मीटिंग में इस बात पर विचार किया कि दर्शकों को विश्वास दोबारा कैसे बहाल किया जाए। इस दौरान सूर्यवंशी और 83 जैसी फिल्मों की निर्माता कंपनी के सीईओ शिबाशीष सरकार ने सुझाव दिया, 'आने वाले दिनों में सिनेमाघरों को ऐसा माहौल बनाना होगा, जिससे दर्शकों में भरोसा बढ़े और वे सिनेमा में वापसी करें। दर्शक काफी दिनों से घरों में बंद हैं और अब वे सिनेमा आना चाहते हैं। हमने चाइना से लेकर कोरिया तक में देखा कि लोग सिनेमा में लौट रहे हैं। लेकिन हम लोगों के पास रिलीज करने के लिए ज्यादा कंटेंट नहीं है। शूटिंग की गाइडलाइंस अभी साफ नहीं हैं। इसलिए यह कहना मुश्किल है कि आगे फिल्में कब आएंगी। ऐसे में, हमें तमिल, तेलुगू और हिंदी इंडस्ट्री की फिल्मों को सभी भाषाओं में रिलीज करना चाहिए। इस तरह हम सबका बिजनेस कुछ ज्यादा हो सकता है। एक रिलीज डेट पर देश भर में एक बड़ी फिल्म रिलीज होनी चाहिए।'

'जल्द खोलें जाएं सिनेमाघर'

फिलहाल सिनेमाघरवाले जल्द से जल्द सिनेमाघर खोलने की परमीशन मिलने के इंतजार में हैं। इस बारे में आईनॉक्स सिनेमाज के सीईओ आलोक टंडन कहते है, 'अगर सरकार एयरलाइंस को बिना कोई सीट छोड़े दोबारा फ्लाइट शुरू करने की परमीशन दे सकती है, तो फिर सिनेमावालों को परमीशन देने में क्या दिक्कत है। हम लोग तो फिर भी सिनेमा में हरेक फैमिली या ग्रुप के बाद एक सीट छोड़ने के लिए तैयार हैं।' वहीं पीवीआर पिक्चर्स के सीईओ कमल ज्ञानचंदानी ने कहा कि 'दुनियाभर के सिनेमाघरों के कोरोना के बाद सिनेमा शुरू करने के लिए अलग-अलग तरीके तलाशे जा रहे हैं। लग्जरी सिनेमाघरों में पहले से ही सीटों के बीच काफी गैप है। इसलिए वहां सीटें छोड़ने की जरूरत नहीं है। सिनेमाघरों में सीटें छोड़ने का प्रस्ताव हम सरकार को दे चुके हैं। हम सिनेमाघरों में दर्शकों की सुरक्षा के लिए उपाय करने को तैयार हैं।'

तैयार नहीं हैं ज्यादा फिल्में

वहीं यूएफओ मूवीज के जेएमडी कपिल अग्रवाल ने कहा, 'हमारे पास देश भर से आए डाटा के मुताबिक फिलहाल सभी भाषाओं की सिर्फ 59 फिल्में बनकर तैयार हैं। वहीं हिंदी भाषा में तो सिर्फ 2 फिल्म ही बनकर तैयार हैं और 9 फिल्में पोस्ट प्रॉडक्शन में हैं। अभी शूटिंग को लेकर कोई गाइडलाइंस नहीं आई हैं। वहीं ये भी नहीं पता कि कहां पर शूटिंग की परमीशन मिलेगी। हमारी फिल्मों में विदेश की लोकेशन काफी होती है, लेकिन वहां पर शूटिंग के लिए पता नहीं कितना वक्त लगेगा। इसी तरह कोरोना के बाद शायद कुछ रोमांटिक सींस भी चेंज करने पड़ेंगे। ऐसे में, डायरेक्टर को फिल्म की स्क्रिप्ट से लेकर लोकेशन तक पर दोबारा मेहनत करनी पड़ेगी। वहीं फिल्मों के लिए लेबर मिलना भी आसान नहीं होगा। इसलिए आने वाले दिनों में फिल्में बननी कम हो जाएंगी। इसलिए हमारा सुझाव है कि हर भाषा की फिल्म सभी भाषाओं में रिलीज हो। दूसरा सुझाव यह है कि जिस दिन एक भाषा की बड़ी फिल्म रिलीज हो रही है, तो उस दिन दूसरी कोई भी बड़ी फिल्म किसी दूसरी भाषा में भी रिलीज न हो। इससे सभी का फायदा होगा।'